पाठ 11. चालाक भेड़

पाठ का परिचय

यह कहानी एक चालाक भेड़ के बारे में है। यह हमें मुश्किलों का सामना साहस और बुद्धिमानी से करने की प्रेरणा देती है। किसी गाँव में एक गड़रिया रहता था। वह अपनी भेड़ों को भरपेट खाना नहीं देता था। भेड़ों को इधर-उधर से चोरी करके खाने की आदत पड़ गई थी। एक बार गड़रिया भेड़ों को लेकर जंगल से लौट रहा था। एक नन्ही भेड़ जिसे बहुत भूख लगी थी, किसी झाड़ी में छिप गई और सबके जाने के बाद आराम से पौधे खाने लगी। धीरे-धीरे रात हो गई। नन्ही भेड़ को डर लगने लगा। उसे लगा कि अब अवश्य ही उसे कोई न कोई जंगली जानवर अपना शिकार बना लेगा। तभी उसे शेर के पदचिह्न दिखाई दिए और एक उपाय सूझा। वह शेर के पदचिह्नों के पास बैठ गई और जो भी जानवर उसे खाने के लिए आता वह बहाना बनाती कि वह वनराज सिंह का भोजन है और वे ही उसे वहाँ बैठे रहने के लिए कहकर गए हैं। इतना कहकर वनराज के पदचिह्न दिखा देती। एक के बाद एक कई जंगली जानवर वहाँ आए परंतु वनराज के डर से किसी ने भी नन्ही भेड़ का शिकार नहीं किया। अंत में स्वयं वनराज सिंह आए तो नन्ही भेड़ ने उन्हें पूरी कहानी सुना दी तब सिंह ने भी उसकी बुद्धिमानी से प्रसन्न होकर उसका शिकार नहीं किया और उसे सुरक्षित गड़रिये की बाड़ी तक पहुँचा दिया।

पाठ का वाचन

कहानी का आदर्श वाचन करें। कठिन शब्दों को शुद्ध उच्चारण सहित कक्षा में दोहराएँ। इसके बाद बच्चों से कहानी का थोड़ा-थोड़ा अंश पढ़वाएँ। उनके उच्चारण पर ध्यान दें तथा आवश्यक संशोधन करें।

महत्वपूर्ण चर्चा

निम्नलिखित प्रश्न पूछते हुए बच्चों से चर्चा करें –

- मुश्किल में होने पर वे क्या करते हैं?
- किससे सहायता लेते हैं?
- यदि कोई सहायता उपलब्ध न हो तो क्या करते हैं?